लिट्

लिट् - सेट् / अनिट् / वेट् विचार

7.2.61	अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् ।
7.2.62	उपदेशेऽत्वतः ।
7.2.63	ऋतो भारद्वाजस्य ।

इट् का आगम ६ आर्धधातुक लकारों में होता है ।- लिट् , लुट् , लृट् , लुङ् , लृङ् , आ.लिङ्

इनमें लुट् में (जिसमें तास् होता है) ज्यादा परेशानि नहिं है । लिट् और लुङ् में ज्यादातर सूत्र विचार करने पडते हें । यहांपर हम् लिट् को ही विचार करेंगे ।

सेट् और अनिट् का विचार करने के वाद , अभी अजन्त और अच् वाले हलन्त का विचार कर रहे हें । फिर थल् में वेशेष रूप से विचार होगा ।

हमें यह देखना होगा की धातु **अजन्त** है की **हलन्त** । फिर् **सेट्** है या **अनिट्** । फिर कौनसे अनुबन्ध वाला है ? (जैसे ऊ अनुबन्ध होने से वह वेट् हो जायगा ।)

१. कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि - ७.२.१३
   इसे क्रादि नियम भी कहते हें । क्रादि ८ धातुएं हैं । इनको छोडकर अन्य सारे अनिट् धातुएं लिट् में सेट् हो जाते हें । पर थल् में कुछ विशेष वाते है । जैसे -

लिट् - सेट् - थल्

सेट् धातुएं तो थल् में सेट् रहेंगे ही । पर अनिट् धातुओं के २ विभाग किये जाते हें - अजन्त , हलन्त । फिर हलन्त धातुओं मे भी देखना पडेगा की कौन से धातु में अकार है ।

धातु -
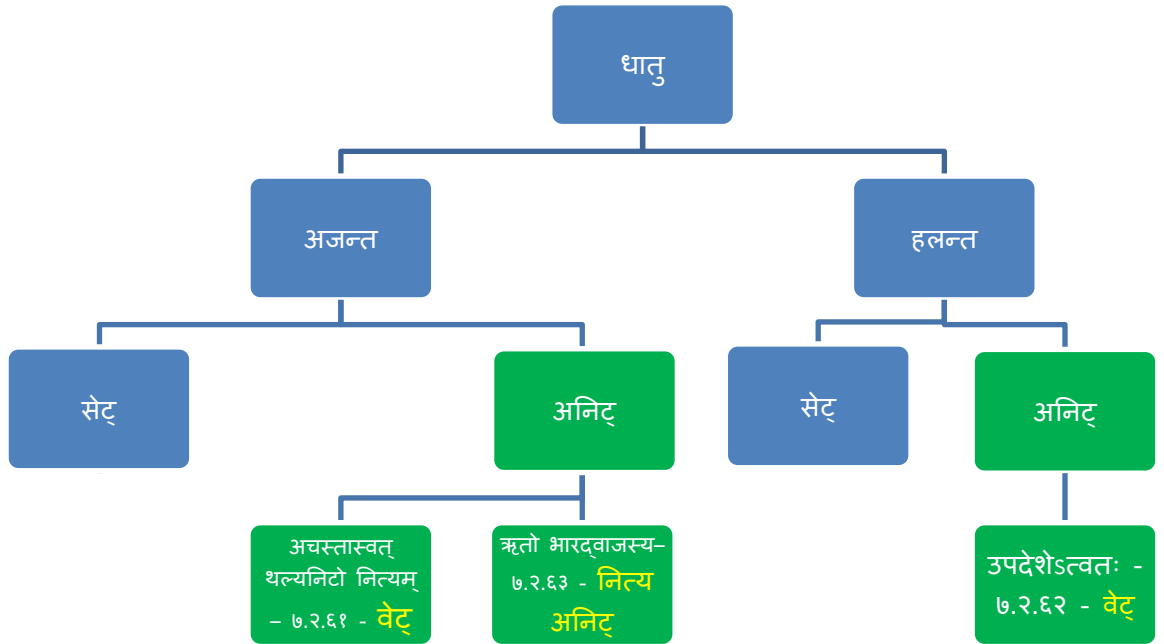
अजन्त धातु -

२. अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् - ७.२.६१

अजन्त अनिट् धातुएं थल् में अनिट् रहती है ।

तास् वत् कहने का उद्देश्य है की जो तास् मे अनिट्, यानि pure अनिट् धातु है, उस को थल् में क्या किया जाय ?

अकारवान्

३. उपदेशेऽत्वतः -७.२.६२

उपदेश अवस्था में जो अकारवान् धातुएं है , वे भी थल् में नित्य अनिट् रहते हें ।

पर इन् दोनो सूत्र को विकल्प मे कराने के लिये भारद्वाज कहते हें ।

४. ऋतो भारद्वाजस्य - ७.२.६३

उनके मत में शिर्फ ऋ - कारान्त अनिट् धातु ही थल् में अनिट् रहेंगे ।

मतलव यह है की ऋ दन्त से भिन्न अजन्त और अकारवान धातुएं थल् में वेट् हो जाएंगे ।

धातु - थल् -

- सेट् - हमेशा लिट् में सेट् ही रहेंगे । इन में विचार की कोइ आवश्यकता नहिं है ।
- क्रादि ८ - हमेशा अनिट्
- अजन्त / अकारवान् (उपदेश में) = थल् में विकल्प से सेट्
- अनिट् - (अजन्त / अकारवान् अनिट्) = थल् को मिलाकर पूरे लिट् में सेट्

लुङ् लकार

लुङ् - अङ - बृद्धि
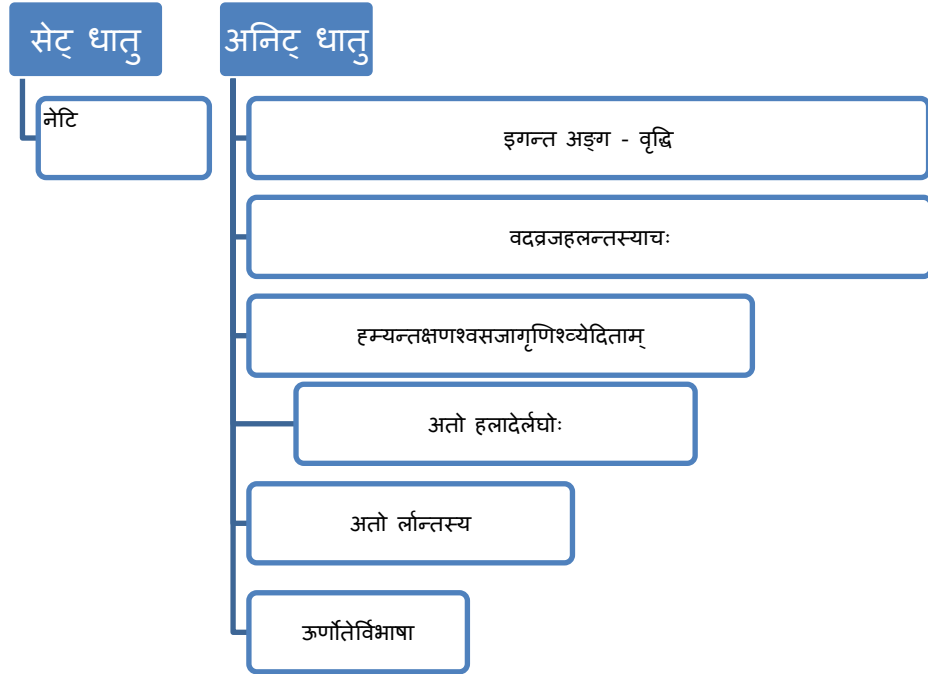
लुङ् लकार होने से अङ के बृद्धि के लिये सूत्र -

7.2.1	सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ।
7.2.2	अतो र्लान्तस्य ।
7.2.3	वदव्रजहलन्तस्याचः ।
7.2.4	नेटि ।
7.2.5	हम्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् ।
7.2.6	ऊर्णोतेर्विभाषा ।

7.2.7	अतो हलादेर्लघोः ।

१. “सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु” के अनुसार चाहे कोइ भी सिच् परे हो, अङ् अगर इगन्त हो, तो उसमें बृद्धि हो । जैसे - क्षी- अक्षैसीत् , ची - अचैषीत् , अपावीत् , कृ - अकार्षीत् , हृ - अहार्षीत् ।

२. “वदव्रजहलन्तस्याचः” - यहां पर हलन्त धातुओं के जो उपधा में इक् वर्ण है, उनके वृद्धि के लिये सूत्र लाये हैं । वद और ब्रज को “अतो हलादेर्लघोः” से वैकल्पिक वृद्धिको हटाने के लिये, यह सूत्र की आवश्यकता है । पर अर्, अल् अन्त वाले अङ् होने से-

३. “अतो र्लान्तस्य” - अर्, अल् वाले अङ में अ को वृद्धि हो कर आ होता है । गैसे - क्षर् - अक्षारीत् , ज्वल् - अज्वालीत् , त्सर- अत्सारीत् , ह्मल - अह्मालीत् ।

शङ्का - यह सूत्र न होता तो भी अगले सूत्र से बृद्धि हो ही रहि थि ।

समाधान - “अतो हलादेर्लघोः” से वैकल्पिक वृद्धिको हटाने के लिये, यह सूत्र आवश्यक है ।

अवतक जो तीन सूत्र पढे गये हैं , उनमें इट् आगम का विचार नहिं हुआ था । अभी इट् आगम के स्थान में विशेष कार्य विधान कर रहे हैं ।

४. इडादि सिच् में वृद्धि निषेध -
नेटि - हलन्त धातु में इडादि सिच् होने से बृद्धि निषेध ।

५. सारे हलन्त नहिं , ह्,म्,य्, ए दन्त , और कुछ धातु (क्षण, श्वस , जागृ , णि ,श्वि) में वृद्धि निषेध किया गया ।

अभी विकल्प में वृद्धि करने के लिये २ सूत्र ला रहे हैं -

६. ऊर्णोतेर्विभाषा - सिर्फ ऊर्णु धातु के लिये ही यह सूत्र वनाया गया । ऊर्णु के उ को विकल्प में वृद्धि होति है ।

७. अतो हलादेर्लघोः - हलादि सेट् धातु के विच का अकार को विकल्प से वृद्धि हो ।

धातु → सेट्/ अनिट्

सेट् - अजन्त सेट् / हलन्त सेट् -

१. अनिट् -

✓ अजन्त - वृद्धि -

- ✓ इक् अन्त - नित्य
- ✓ ए अन्त - निषेध
- ✓ ऊर्णु - विकल्प
- ✓ अदुपध - विकल्प

- हलन्त अनिट् - वृद्धि
  - ✓ वद , व्रज , हलन्त - नित्य
  - ✓ हलादि हलन्त अकारवान् - विकल्प
- सेट् - वृद्धि निषेध